कानजीस्वामी की जयन्ती मनाई

1. जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की 123वीं जन्म जयन्ती दिनांक 23 अप्रैल को बहुत आनन्दपूर्वक मनाई गई।

इस अवसर पर गुरुदेवश्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। उन्होने गुरुदेवश्री के जीवनकाल की घटनाओं का उल्लेख करते हुए उन्हें क्रमबद्धपर्याय, निश्चय-व्यवहार इत्यादि गूढ विषयों के रहस्योद्घाटक एवं प्रचारक बताया।

पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, श्री ताराचंदजी सोगानी, विद्यार्थियों में से नवीन जैन उज्जैन व विवेक जैन भिण्ड ने अपने विचार प्रस्तुत किये। ज्ञायक जैन सिलवानी एवं जीवेश जैन पिड़ावा ने काव्यपाठ द्वारा गुरुदेवश्री के उपकार को स्मरण किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण विवेक जैन अमरमऊ एवं सभा का संचालन पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री ने किया।

2. देवलाली-नासिक (महा.): यहाँ पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्रीमती मीताबेन शैलेषभाई मुमुक्षु परिवार बोरीवली के ओर से आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की 123वीं जन्मजयन्ती के प्रसंग पर दिनांक 19 से 23 अप्रैल 2012 तक श्री 170 तीर्थंकर विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: पूजन विधान के उपरान्त गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का सी.डी. प्रवचन एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के प्रवचन होते थे। दोपहर में डॉ. उज्ज्वला शहा मुम्बई द्वारा करणानुयोग पर एवं पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा प्रवचनसार पर प्रवचन हुये। रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' द्वारा समयसार एवं पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा प्रवचनसार पर प्रवचनों का लाभ मिला। तत्पश्चात् गुरुदेवश्री के जीवन पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न हुये।

इसी प्रसंग पर दिनांक 21 अप्रैल को नवनिर्मित साहित्य विक्रय केन्द्र का उद्घाटन स्व. बेलजीभाई रायशी शाह परिवार की ओर से किया गया। दिनांक 22 अप्रैल को नवीनीकृत भोजनालय का उद्घाटन सौ. आरतीबेन अशोकभाई घीया परिवार मुम्बई द्वारा किया गया। दिनांक 23 अप्रैल को गुरुदेवश्री की जन्म जयन्ती के अवसर पर प्रात: प्रभात फेरी निकाली गई। गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन व विद्वानों के प्रवचन के पश्चात् गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया, जिसमें ब्र. अभिनन्दनकुमारजी, ब्र. हेमचंदजी 'हेम', पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर एवं पण्डित दिनेशभाई शहा मुम्बई ने गुरुदेवश्री के व्यक्तित्व व कर्तृत्व पर प्रकाश डाला। सभा में पण्डित दीपकजी 'धवल' भोपाल एवं कु. परिणति पाटील जयपुर ने काव्य पाठ किया।

सभा का संचालन श्री कान्तिभाई मोटानी ने किया।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 30 (वीर नि. संवत् - 2538) 347 अंक : 11

जीवनि के परिणामनि...

जीवनि के परिणामनि की यह अतिविचित्रता देखहु ज्ञानी।।टेक।।
नित्य निगोदमांहितैं कढिकर, नरपरजाय पाय सुखदानी।
समकित लहि अन्तर्मुहूर्त में, केवल पाय वरै शिवरानी।।
जीवनि के परिणामनि...।।1।।

मुनि एकादश गुणथानक चढि, गिरत तहाँतैं चित भ्रम ठानी।
भ्रमत अर्धपुद्गल प्रावर्तन, किञ्चित् ऊन काल परमानी।।
जीवनि के परिणामनि...।।2।।

निज परिणामनि की संभाल में, तातैं गाफिल मत ह्वै प्रानी।
बंध मोक्ष परणामनि ही सों, कहत सदा श्री जिनवरवानी।।
जीवनि के परिणामनि...।।3।।

सकल उपाधि निमित्त भावनि सों, भिन्न सु निज परिनति को छानी।
ताहि जानि रुचि ठानि होहु थिर, 'भागचंद' यह सीख सयानी।।
जीवनि के परिणामनि...।।4।।

– कविवर पण्डित भागचन्दजी

छहढाला प्रवचन

अन्तरात्मा एवं परमात्मा

उत्तम मध्यम जघन त्रिविध के अन्तर-आतम ज्ञानी।
द्विविध संगबिन शुध उपयोगी मुनि उत्तम निज ध्यानी।।४।।
मध्यम अंतर-आतम हैं जे देशव्रती अनगारी।
जघन कहे अविरत-समदृष्टि, तीनों शिवमगचारी।।
सकल निकल परमातम द्वैविध, तिनमें घाति निवारी।
श्री अरिहंत सकल परमातम, लोकालोक निहारी।।५।।
ज्ञानशरीरी त्रिविध कर्ममल वर्जित सिद्ध महन्ता।
ते हैं निकल अमल परमातम, भोगैं शर्म अनंता।।
बहिरातमता हेय जानि तजि, अंतर आतम हूजै।
परमातम को ध्याय निरंतर जो नित आनंद पूजै।।६।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

इस छहढाला के कर्ता पं. दौलतरामजी एक ही भजन में सम्यग्दृष्टि की अद्भुत दशा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि ह्न

चिन्मूरत दृग्धारी की मोहि, रीति लगत है अटापटी।।टेक।।
बाहिर नारकि कृत दुख भोगै, अन्तर सुखरस गटागटी।
रमत अनेक सुरनि संग पै तिस, परनतितैं नित हटाहटी।।चिन्मूरत।।
ज्ञान-विराग शक्तितैं विधिफल, भोगतपैं विधि छटापटी।
सदन निवासी तदपि उदासी, तातैं आस्रव छटाछटी।।चिन्मूरत।।
जे भव हेतु अबुध के ते तस, करत बंध की झटाझटी।
नारक पशु तिय षँड विकलत्रय, प्रकृतिन की ह्वै कटाकटी।।चिन्मूरत।।
संयम धर न सकै पै संयम, धारन की उर चटाचटी।
तासु सुयश गुन की 'दौलत' के लगी रहै नित रटारटी।।चिन्मूरत।।

अहो ! चैतन्यमूर्ति आत्मा की दृष्टि के धारक सम्यग्दृष्टि जीवों की दशा कोई अटपटी आश्चर्यकारक लगती है। कोई जीव नरक में सम्यग्दृष्टि हो, बाहर में तो उसे नारकियों के द्वारा घोर दु:ख हो रहा हो; परन्तु अंतर में उसी समय भिन्न चेतना में उसे आत्मा के सुखरस की गटागटी चलती है। जैसे गन्ने का रस गटक-गटक पीवे, वैसे अन्तर की चेतना में उसे सुखरस की गटागटी चलती है ह्न ऐसी सम्यग्दृष्टि की परिणति अटपटी है।

कोई जीव स्वर्ग में सम्यग्दृष्टि हो, बाह्य में अनेक देवियों के साथ क्रीड़ा करता हो, उस जाति का राग भी हो; किन्तु फिर भी उसकी परिणति उससे सदा हटाहटी अर्थात् अलग ही रहती है। ऐसी धर्मी की विचित्र परिणति है।

अनेक प्रकार के कर्मफल भोगते हुए भी उनके ज्ञान-वैराग्यशक्ति के बल से सदैव कर्म घटते ही रहते हैं; सदन-निवासी अर्थात् गृहवासी होते हुए भी अंतरंग में उससे उदासीनता है, इसकारण उसको आस्रव की छटाछटी है, आस्रव छूटते ही जाते हैं। जो क्रिया अज्ञानी के भव के हेतु होती है, वही क्रिया चैतन्य की अंतर्दृष्टि के कारण सम्यग्दृष्टि को बंध की झटाझटी करती है अर्थात् उसे निर्जरा ही होती है।

नरकगति, तिर्यंचगति, स्त्रीपर्याय, नपुंसकपर्याय, विकलत्रय आदि ४१ प्रकृतियों की तो सम्यग्दृष्टि को निरंतर कटाकटी हो गई है अर्थात् यह ४१ प्रकृतियाँ उसे बँधती नहीं हैं।

वह अविरत सम्यग्दृष्टि यद्यपि संयम को धारण नहीं कर सकता, तथापि उसके अंतर में संयम धारण करने की चटापटी रहती है; निरन्तर संयमभावना रहती है।

अहो ! सम्यग्दृष्टि के ऐसे प्रशंसनीय गुणों का खजाना स्वयं प्राप्त करने हेतु दौलतरामजी को सदैव रटन रहती है।

अहा ! चैतन्यमूर्ति आत्मा की दृष्टि के धारक अंतरात्मा-सम्यग्दृष्टि जीवों की दशा कोई अद्भुत अचिंत्य है। उसकी पहचान करने से भी अपने आत्मस्वरूप की अचिंत्य महिमा लक्ष में आती है।

वह अंतरात्मा उत्कृष्ट हो, मध्यम हो या सबसे छोटा जघन्य हो; परन्तु शुद्धात्मा की प्रतीतिरूप सम्यग्दर्शन सभी के समान है; प्रतीति में फर्क नहीं है। सभी अंतरात्मा भूतार्थदृष्टिवंत हैं, शुद्ध चैतन्य की दृष्टि के धारक हैं। राग होने पर भी

राग से पार उनकी ज्ञानचेतना है, जिसे कोई विरले ही पहचानते हैं।

भावलिंगी मुनियों में भी जो निर्विकल्प ध्यान में लीन हैं ह्न ऐसे शुद्धोपयोगी को तो उत्तम अंतरात्मा में गिने और शुभोपयोगी मुनि को मध्यम अंतरात्मा में गिने। अरे ! जब महाव्रतादि की कोई शुभवृत्ति भी अंतरात्मा में नहीं टिकती, तब दूसरे राग की क्या बात करें ? प्रवचनसार में भी कहा है कि मोक्षमार्ग में शुद्धोपयोगी मुनि मुख्य है ह्न अग्रसर है और शुभोपयोगी मुनि को तो उनके पीछे-पीछे लिया है। जिसे सम्यग्दर्शन नहीं है, उसको तो मोक्षमार्ग गिना ही नहीं, वह तो बंधमार्ग में चलने वाला बहिरात्मा है।

बहिरात्मा-अंतरात्मा-परमात्मा ह्न इन तीन प्रकारों में जगत के सभी जीव आ जाते हैं। जीवतत्त्व की श्रद्धा में उनकी पहचान समा जाती है। जो स्वयं शुद्धोपयोग में लीन हैं, उसको तो उस समय दूसरे जीव का विचार ही नहीं है एवं तीन भेद का लक्ष्य भी नहीं है; किन्तु जो सविकल्प दशा में है, वह व्यवहार जीव की श्रद्धा में ऐसे त्रिविध आत्मा का स्वरूप विचारता है। ऐसा यथार्थ विचार करने वाला अंतरात्मा है। बहिरात्मा के या परमात्मा के ऐसा विचार नहीं होता; क्योंकि बहिरात्मा तो उसका सच्चा स्वरूप नहीं जानता और परमात्मा को कोई विकल्प नहीं है। यह तो निश्चय सहित व्यवहार वाले साधक जीवों की बात है।

अंतरात्मा की परमार्थदृष्टि में अर्थात् शुद्धनय में तो एक अखंड ज्ञायकभावरूप ही आत्मा का अनुभव है, तीन प्रकार की पर्याय के भेद उसमें नहीं आते हैं। जो शुद्धदृष्टि से अंतरात्मा हुआ, वह व्यवहार में जीव की पर्याय के प्रकारों को भी जैसे हैं, वैसे जानता है। जीव स्वयं अंतरात्मा होकर तीन भेदों को जानता है; परन्तु स्वयं बहिरात्मा रहकर तीन प्रकार के आत्मा का सच्चा ज्ञान नहीं कर सकता।

छठवें-सातवें गुणस्थान वाले भावलिंगी मोक्षमार्गी मुनि ऐसा जानते हैं कि अविरत सम्यग्दृष्टि जीव भी मोक्षमार्गी है। जैसे मैं मोक्षमार्गी हूँ, वैसे वह भी मोक्षमार्गी है; भले ही अल्प हो (जघन्य हो) तो भी वह है तो मोक्ष के मार्ग में। श्री कुन्दकुन्दस्वामी ने मोक्षप्राभृत में उसको धन्य कहा है। अहा ! छठवें गुणस्थानवर्ती परमेष्ठी मुनि चौथे गुणस्थान वाले गृहस्थ को मोक्षमार्ग में स्वीकार करते हैं 'ये तीनों शिवमगचारी'। तीनों प्रकार के अंतरात्मा मोक्षमार्ग में केलि करनेवाले हैं ह्न

'केलि करें शिवमारग में, जगमांहिं जिनेश्वर के लघुनंदन।' इसप्रकार अंतरात्मा की बात की।

अब परमात्मा कैसा है? सो कहते हैं; परमात्मा के दो प्रकार हैं ह्न एक सिद्ध परमात्मा, दूसरा अरिहंत परमात्मा। सिद्ध भगवान तो अशरीरी, चैतन्यबिंब सिद्धालय में अनन्त विराज रहे हैं, उन्हें शरीर न होने से 'निकल परमात्मा' कहते हैं और अरहंत भगवान ढाई द्वीप संबंधी मनुष्यलोक में तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान में शरीरसहित विचरते हैं, उनको सकल परमात्मा कहा जाता है। (कल=शरीर, उससे सहित, सो सकल; उससे रहित, सो निकल) केवलज्ञानादि गुण तो दोनों परमात्मा के समान हैं। अहा, जिनकी पहचान से आत्मा के सच्चे स्वरूप की पहचान हो जाये ह्न ऐसे परमात्मा की महिमा की क्या बात !

परमात्मपद के साधने वाले मुनियों की दशा भी अद्भुत होती है...मानो छोटे-से सिद्ध ही हैं। मुनि की सौम्यमुद्रा में वीतरागता की झलक दिखती है, उपशम रस में उनका आत्मा झूल रहा है। छठवें गुणस्थान के समय उनको मध्यम-अन्तरात्मा कहा, परन्तु जब वे मुनि हुए; तब प्रथम उनको शुद्धोपयोग में सप्तम गुणस्थान हुआ था, अतएव उत्तम-अन्तरात्मादशा हुई थी; बाद में शुभोपयोग होने पर उनको मध्यम कहा; परन्तु जो शुभराग को मोक्षमार्ग समझता है अर्थात् रागादि विभावों को ही निजस्वभाव मानता है ह्न ऐसा जीव बंधमार्ग में ही है, मोक्ष के मार्ग को वह नहीं जानता। वह बहिरात्मा मोक्ष के मार्ग से बाहर है।

सम्यग्दृष्टि ने सर्वज्ञ परमात्मा को श्रद्धा में लिया है। सर्वज्ञता वाले जीव जगत् में हैं और मेरा आत्मा भी ऐसी ताकत वाला है ह्न ऐसा धर्मी जानते हैं। परम उत्कृष्ट पर्यायरूप परिणत आत्मा ही परमात्मा है। ऐसे परमात्मा इस समय इस भरतक्षेत्र में नहीं होते; परन्तु विदेहक्षेत्र में सीमंधर भगवान आदि लाखों जीव ऐसे परमात्मपद में इस समय भी साक्षात् विद्यमान हैं। ऐसे सर्वज्ञपद की पहचान यहाँ रहकर भी हो सकती है। सर्वज्ञपद की जिसको श्रद्धा नहीं है, वह तो बहिरात्मा है।

'जो जो देखी वीतराग ने, सो सो होसी वीरा रे' ह्न ऐसा निर्णय करने में भी सर्वज्ञपद का स्वीकार आ जाता है। कोई सर्वज्ञ की पहचान के बिना बात करे तो वह सत्य नहीं है।

(क्रमशः)

नियमसार प्रवचन -

आत्मा कैसा है ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 43वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलतः इसप्रकार है -

णिद्दंडो णिद्दंद्दो णिम्ममओ णिक्कलो णिरालंबो।
णीरागो णिद्दोसो णिम्मूढो णिब्भयो अप्पा।।४३।।
निर्दण्ड है निर्द्वन्द है यह निरालम्बी आतमा।
निर्देह है निर्मूढ है निर्भयी निर्मम आतमा।।४३।।

यह आत्मा निर्दंड, निर्द्वन्द, निर्मम, निःशरीर, निरालम्ब, निराग, निर्दोष, निर्मूढ और निर्भय है।

(गतांक से आगे ...)

शुद्धस्वभाव तो नित्य है और समय-समय का विकार अनित्य है, अतः उसका ज्ञानी को निषेध वर्तता है। इसप्रकार त्रिकालीस्वभाव का ज्ञान करने पर पर्याय में होनेवाले अनित्य राग-द्वेषादि का ज्ञान हो जाता है। त्रिकाली का ज्ञान करना, निश्चयनय से है और राग-द्वेषादि का ज्ञान हो जाना व्यवहारनय से है ह्न इसप्रकार ज्ञान प्रमाण होता है। जो व्यवहार से लाभ मानते हैं, उनका निश्चय और व्यवहार एक भी सच्चा नहीं। साधकदशा में राग और निमित्त बिल्कुल नहीं होते - ऐसा कहनेवालों का ज्ञान खोटा है। त्रिकालस्वभाव की श्रद्धा और ज्ञान होने पर यद्यपि धर्मी जीव को अपूर्ण दशा में होनेवाले राग और निमित्त का ज्ञान व्यवहार से होता है, तथापि राग के समय भी अवलम्बन तो शुद्धस्वभाव का ही वर्तता है।

(६) चौदह प्रकार के अभ्यन्तर परिग्रह एकसमय की पर्याय में हैं, शुद्धस्वभाव में उनका अभाव है; अतः आत्मा नीराग है।

'मिथ्यात्व, वेद, राग, द्वेष, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, क्रोध, मान, माया, लोभ नामक चौदह अभ्यन्तर परिग्रह का अभाव होने से आत्मा नीराग है।'

शुद्ध आत्मा में चौदह प्रकार के अभ्यन्तर परिग्रह नहीं हैं। परिग्रह एकसमयमात्र की अवस्था में हैं; वह त्रिकाल शुद्धस्वभाव में नहीं हैं।

मिथ्यात्व ह्न परपदार्थ की, निमित्त की, पुण्य-पाप की रुचि करना और स्वभाव की रुचि छोड़ना मिथ्यात्व है। निमित्त हो तो लाभ हो, पुण्य से धर्म होगा अथवा एकसमय की पर्याय जितना ही आत्मा को मानना, मिथ्यात्व का महान रोग है, उसे परिग्रह में परिगणित करके, वह शुद्धात्मा में नहीं है ह्न ऐसा कहा है। शुद्धात्मा का अवलम्बन लेते ही मिथ्यात्व नष्ट हो जाता है।

वेद ह्न पुरुषवेद, नपुंसकवेद, स्त्रीवेद एकसमय का विकार है, यह शुद्धस्वभाव में नहीं है। ज्ञानी को अधूरी दशा में अल्पवेद के परिणाम होते हैं; किन्तु वह उनको अपनी चीज नहीं मानता, ज्ञान को ही अपनी चीज मानता है।

राग ह्न शुभाशुभराग जीव की पर्याय में हैं, त्रिकाली स्वभाव में नहीं हैं।

द्वेष ह्न प्रतिकूलता की आकुलता एकसमय की पर्याय में है, शुद्धस्वभाव में द्वेष नहीं है।

हास्य ह्न हास्य अथवा कौतूहलता के परिणाम एकसमय पर्यन्त के हैं, त्रिकाल स्वभाव में नहीं हैं।

धर्मी जीव को मिथ्यात्व के परिणाम नहीं हैं, फिर भी अस्थिरता संबंधी राग-द्वेष-हास्यादि के परिणाम हैं। यदि पर्याय में बिल्कुल विकार न हो तो वीतरागता हो जानी चाहिए; परन्तु ऐसा नहीं होता। पर्याय में होनेवाले विकारी भाव शुद्धस्वभाव में नहीं हैं, इतना बतलाने के लिये उनका अभाव कहा। यह कथन अनादि से चली आ रही पर्यायदृष्टि हटाकर द्रव्यदृष्टि कराने के लिये हैं।

जिस जीव को अपनी शुद्धात्मा को छोड़कर अन्य चीजों को देखकर विस्मय लगे और हास्य उत्पन्न हो, वह मिथ्यात्वी है। धर्मी जीव को अपनी निर्बलता के कारण अल्प हास्य के परिणाम होते हैं, पर वह उनको अपना स्वरूप नहीं मानता; क्योंकि ऐसे परिणाम शुद्धस्वभाव में नहीं है।

रति ह्न अनुकूल पदार्थों के प्रति प्रसन्नता, नया मकान या आभूषणादि की प्राप्ति, पुत्र के जन्म-समय प्रसन्नता आदि परिणाम होना रति है। वे परिणाम पर्याय में होते हैं, शुद्ध स्वभाव में नहीं। धर्मी जीव को रति होने पर भी रति का अवलम्बन नहीं है; किन्तु शुद्ध स्वभाव का ही अवलम्बन है।

अरति ह्न परीक्षा में असफल होने पर अप्रसन्नता के परिणाम होना अथवा ऐसे किसी अन्य प्रसंग पर अप्रसन्नता हो जाना अरति है। एकसमय की पर्याय में ऐसे

परिणाम हैं, शुद्ध स्वभाव में उनका अभाव है। शुद्ध स्वभाव का आश्रय लेने पर अरति आदि टल जाते हैं। आत्मा की श्रद्धा-ज्ञान करे वही जीव सफल है, अन्य सभी असफल हैं।

यहाँ यह सर्व परिणाम पर्याय में होते हैं; किन्तु शुद्ध स्वभाव में नहीं होते - ऐसा कहकर पर्यायबुद्धि छुड़ाई है और शुद्धभाव की स्वभावबुद्धि कराई है।

शोक ह्न शोक एकसमय की पर्याय में है, शुद्ध स्वभाव में नहीं। धर्मी जीव को शोक के परिणाम होने पर भी शोक का दृष्टि अपेक्षा से परिग्रह नहीं है। स्वभाव का भान हो गया है, इसलिये शोक का ज्ञान मात्र होता है।

भय ह्न एकसमय की पर्याय में भय के परिणाम होते हैं; किन्तु स्वभावदृष्टि से तो आत्मा भय रहित ही है अर्थात् निर्भय ही है। स्वयं ज्ञानस्वभावी आत्मा है, ऐसा ज्ञान होने पर भय का ज्ञान हो जाता है। भय का ज्ञान भी भय से नहीं होता। ज्ञान भय का नहीं, ज्ञान आत्मा का ही है। अज्ञानी जीव को पर्यायबुद्धि होने से भय लगता है। स्वभावदृष्टिवंत को पर्यायबुद्धि का अभाव है इसलिये वह निर्भय है।

जुगुप्सा ह्न ग्लानि के परिणाम एकसमय की पर्याय में हैं, आत्मा में वे परिणाम नहीं हैं। ग्लानि का ज्ञान ग्लानि से नहीं होता; किन्तु ग्लानिरहित शुद्ध त्रिकाली स्वभाव का ज्ञान होने पर पर्याय में होने वाली ग्लानि का ज्ञान हो जाता है और वह अपने स्वभाव में नास्तिरूप से है ह्न ऐसा ज्ञानी जानता है।

क्रोध, मान, माया, लोभ ह्न कषाय के परिणाम एकसमय की पर्याय में होते हैं, शुद्ध आत्मा में उनका अभाव है। मेरा आत्मा शुद्ध है, ऐसा ज्ञान करने पर कषाय मेरे में है ही नहीं ह्न ऐसा ज्ञान हो जाता है।

इस प्रकार चौदह परिग्रह के अभाव से आत्मा नीराग है।

धर्मी जीव को लड़ाई के परिणाम होने पर भी शुद्ध चैतन्य की दृष्टि के कारण मुख्यपने निर्जरा है। मिथ्यादृष्टि मुनि को दया के परिणाम होने पर भी पर्यायबुद्धि के कारण बन्धदशा ही है।

कोई पूछे कि इसमें धर्म क्या आया? चौदह परिग्रह पर्याय में हैं, शुद्ध स्वभाव परिग्रह रहित है ह्न ऐसा यथार्थ ज्ञान होने पर धर्मदशा प्रगट होती है। इसमें दया पालने का अथवा ऐसा ही कोई दूसरा धर्म नहीं आया।

ऐसा कोई कहे तो उससे कहते हैं कि पर की दया तो तू पाल ही नहीं सकता और

त्रिकाली स्वभाव में परिग्रह की पकड़ का अभाव है। आत्मा नीराग है ह्न ऐसी दृष्टि होना ही स्वदया है, वही धर्म है। शुद्ध स्वभाव की रुचि करना ही प्रथम धर्म है। सम्यग्दृष्टि जीव को युद्ध के परिणाम होने पर भी और अस्थिरता के क्रोध-मान का अल्पबन्ध होने पर भी, इस अल्पक्रोध-मान जितना ही मैं नहीं, मैं तो शुद्धस्वरूपी नीराग आत्मा हूँ ह्न ऐसा भान है। बाह्यक्रिया हाथी के ऊपर बैठने की हो, बाणों से दूसरों को मारता हुआ दिखाई पड़ता हो तो भी क्रोध एक समय की पर्याय है, उसकी मेरे नीराग स्वभाव में नास्ति है, ऐसा ज्ञान का अस्तिपना और विकार का नास्तिपना वर्तता है। धर्मी को शुद्ध चैतन्यस्वभाव की दृष्टि होने से मुख्यपने निर्जरा वर्तती है, श्रद्धा-ज्ञान अपेक्षा से उसके अहिंसा वर्त रही है; इसके विपरीत मिथ्यादृष्टि मुनि जो व्रतादि के परिणाम को अपना मानता है और मात्र इतना ही आत्मा मानता है, उसको नीराग आत्मा का भान नहीं है, परिग्रह की पकड़ वर्तती है। वह जीव बाह्य में दया पालता दिखाई देता हो तथापि अपने चैतन्यस्वभाव का अनादर होने से वह अपनी स्व-हिंसा कर रहा है और बन्धदशा को प्राप्त हो रहा है। इसप्रकार सच्ची दृष्टि से मोक्षमार्ग है और मिथ्यादृष्टि से संसारमार्ग है।

संयोगी भावों को अपना मानना संसार है और संयोगी भावों से रहित नीराग आत्मा को मानना धर्म है।

परपदार्थों के संयोग को अपना मान लेना तो स्थूल भूल है ही, साथ ही दया-दानादि अथवा हिंसा, झूठ, चोरी आदि संयोगी भाव में ही आत्मा को पूर्णतया मान लेना वह संसार है। परपदार्थों का तो आत्मा में सदा ही अभाव है और पर्याय में होनेवाले संयोगी भावों का शुद्ध आत्मा में अभाव है ह्न ऐसी श्रद्धा-ज्ञान होने पर पर्याय में भी संसार के अभाव का परिणमन होता जाता है और शुद्धदशा की प्राप्ति होती है। भरत-बाहुबली को युद्ध के परिणाम होने पर भी तथा बाहुबली को मुनि अवस्था में मान के परिणाम होने पर भी स्वभाव की दृष्टि थी, पर्याय में होनेवाले अल्प मान का स्वीकार नहीं था, किन्तु शुद्धचैतन्य स्वभाव का ही स्वीकार था, अतः समय-समय निर्जरा हो रही थी। त्रिकाली शुद्धस्वभाव की अस्ति और एकसमय के विकार की स्वभाव में नास्ति ही धर्म है तथा एकसमय के विकार की अस्ति और त्रिकालीस्वभाव की नास्ति ही अधर्म है। चौदह परिग्रह से रहित आत्मा नीराग है ह्न ऐसी दृष्टि धर्म का कारण है। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : जिस प्रकार क्रियानय से साध्य सिद्धि है ऐसा एक धर्म है और ज्ञाननय से साध्य सिद्धि है ऐसा भी एक धर्म है; उसी प्रकार त्रिकाली द्रव्य के आश्रय से भी सम्यग्दर्शन हो और निर्मल पर्याय सहित द्रव्य के आश्रय से भी सम्यग्दर्शन हो - ऐसा है क्या ?

उत्तर : नहीं, एक ही समय में जानने योग्य क्रियानय तथा ज्ञाननय इत्यादि अनन्तधर्म है; परन्तु सम्यग्दर्शन का विषय एक नय से त्रिकालीद्रव्य भी है और दूसरे नय से देखने पर पर्याययुक्त द्रव्य भी सम्यग्दर्शन का विषय बने ऐसा कोई धर्म ही नहीं है। सम्यग्दर्शन का विषय तो मात्र भूतार्थ ऐसा त्रिकाली ध्रुव द्रव्य (पर्यायरहित) ही है। उसी के आश्रय से सम्यग्दर्शन होता है, अन्यथा सम्यग्दर्शन नहीं होता।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन तो राग छोड़ने पर होता है न ?

उत्तर : राग की रुचि छोड़कर स्वभाव की रुचि करने से सम्यग्दर्शन होता है। सम्यग्दर्शन होने पर राग से भिन्नता भासित होता है, राग सर्वथा नहीं छूटता; पर राग को दुःखरूप जानकर उसकी रुचि छूटती है।

प्रश्न : गुण-भेद के विचार से भी मिथ्यात्व न टले तो मिथ्यात्व कैसे टलेगा ?

उत्तर : जिसमें राग और मिथ्यात्व है ही नहीं - उस शुद्धवस्तु में परिणाम तन्मय होने पर मिथ्यात्व टल जाता है, दूसरा कोई उपाय मिथ्यात्व के दूर करने का नहीं है। भाई ! गुण-भेद का विकल्प भी शुद्धवस्तु में नहीं है; शुद्धवस्तु की प्रतीति गुण-भेद के विकल्प की अपेक्षा भी नहीं रखती। वस्तु में विकल्प नहीं और विकल्प में वस्तु नहीं। इसप्रकार दोनों की भिन्नता जानकर परिणति विकल्प में से हटकर स्वभाव में आवे तब मिथ्यात्व का अभाव हो जाता है - यही मिथ्यात्व टालने की रीति है अर्थात् उपयोग और रागादिक का भेदज्ञान होना ही सम्यक्त्व का मार्ग है। इसलिए विकल्प की अपेक्षा चिदानन्द स्वभाव की अनन्त महिमा भासित होकर उसका अनन्त गुणा रस आना चाहिए।

प्रश्न : जिसको सम्यग्दर्शन होना ही है, ऐसे जीव की पूर्व भूमिका कैसी होती है ?

उत्तर : इस जीव को जैसा वस्तु का स्वरूप है, वैसा सविकल्प निर्णय होता है, लेकिन सविकल्प से निर्विकल्पता होती ही है, ऐसा नहीं है।

प्रश्न : दृष्टि को स्थिर करने के लिए सामने की वस्तु स्थिर होनी चाहिए; लेकिन दृष्टि तो पलटती रहती है, वह किस तरह स्थिर हो ?

उत्तर : सामने स्थिर वस्तु हो तो उस पर नजर करने से दृष्टि स्थिर हो जाती है। भले ही जब (दृष्टिरूप पर्याय) स्थिर न रह सकती हो तो भी ध्रुव पर नजर एकाग्र करने से अन्य सारी वस्तु नजर में आ जाती है, सारा आत्मद्रव्य दृष्टि में जाना जाता है। मूल बात यह है कि अन्दर में जो आश्चर्यकारी आत्मवस्तु है, उसकी अन्दर से महिमा नहीं आती। द्रव्यलिंगी साधु हुआ लेकिन अन्दर से महिमा नहीं आती। पर्याय के पीछे समूचा ध्रुव महाप्रभु विद्यमान है - इसकी महिमा, आश्चर्य भासित हो तो कार्य होता ही है। आत्मा अनन्त-अनन्त आनन्द का धाम है, इसको विश्वास में लाना चाहिए। विश्वास से जहाज चलता है और समुद्र पार हो जाता है, ऐसे ही अन्दर में आत्मा की प्रभुता का विश्वास आये तब कार्य होता ही है।

जिसने जीवन ज्योति ऐसे चैतन्य का अनादर करके राग को अपना माना है, 'राग मैं हूँ' ऐसा माना है, उसने अपनी आत्मा का घात किया है। जिससे लाभ मानता है उसको स्वयं का माने बगैर उससे लाभ माना नहीं जा सकता। इसलिए राग से लाभ मानने वाला स्वयं का ही घात करने वाला होने से दुरात्मा है, आत्मा का अनादर करने वाला है, अविवेकी मिथ्यादृष्टि है।

प्रश्न : इस पर से ऐसा होता है कि सम्यग्दर्शन प्राप्त करने का पात्र कौन है ?

उत्तर : यह पात्र ही है, लेकिन पात्र नहीं है - ऐसा मान लेता है। यही शल्य बाधक होती है।

प्रश्न : क्या सविकल्प द्वारा निर्विकल्प नहीं होता है ?

उत्तर : सविकल्प द्वारा निर्विकल्प नहीं होता; किन्तु कहा अवश्य जाता है। क्योंकि विकल्प को छोड़कर निर्विकल्प में जाता है, यह बताने के लिए सविकल्प द्वारा हुआ ऐसा कहा जाता है। रहस्यपूर्ण चिट्ठी में आता है कि 'रोमांच होता है' अर्थात् वीर्य अन्दर जाने के लिए उल्लसित होता है, ऐसा बताना है।

समाचार दर्शन -

46वें आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का -

उद्घाटन समारोह हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न

सागर (म.प्र.) : यहाँ रविवार, 13 मई को पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित 18 दिवसीय आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन समारोह हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ।

समारोह की अध्यक्षता श्रीमंत सेठ माणकचंदजी जैन सागर ने की। ध्वजारोहण श्री ऋषभकुमार नीरजकुमार जैन (कर्रापुर वाले) सागर के करकमलों से सम्पन्न हुआ। प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्रीमती सुनीता प्रेमचंदजी बजाज कोटा की ओर से श्री रतनचंद जैन, श्री धर्मेन्द्रजी शास्त्री एवं श्री सचिन्द्रजी शास्त्री ने किया। शिविर का उद्घाटन चौधरी धर्मेन्द्र कुमार जैन कोलारस एवं श्री देवेन्द्र कुमार जैन कोलारस ने किया।

समारोह में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर आदि समस्त विद्वत्गण, अध्यापकगण एवं स्थानीय विद्वान मंच पर विराजमान थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री महेन्द्र कुमारजी सर्राफ सागर मंचासीन थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण महिला मण्डल मकरोनिया, सागर ने किया। मंगलाचरण के पश्चात् श्री ऋषभ समैया एवं पाठशाला के बच्चों ने सभी महानुभावों का स्वागत गीत के माध्यम से स्वागत किया। तत्पश्चात् ज्ञानतीर्थ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की गतिविधियों का परिचय पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने दिया। इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल के उद्बोधन के साथ-साथ पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, श्री धर्मेन्द्रजी जैन कोलारस, श्री नरेशचंदजी जैन सागर, श्रीमती सुधा जैन आदि के उद्बोधन का लाभ मिला।

अंत में सेठ गुलाबचंदजी ने अध्यक्षीय भाषण दिया। शिविर हेतु प्राप्त राशि की घोषणा श्री प्रमोदजी जैन मकरोनिया ने की। दिनभर के कार्यक्रम की घोषणा पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने की।

इस शिविर के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्रीमंत सेठ मानकचंद, प्रेमचन्द, अशोककुमार जैन एवं समस्त बी.एस. जैन परिवार सागर एवं आमंत्रणकर्त्ता श्री सेठ गुलाबचन्द मनीषकुमार जैन सुभाष ट्रांसपोर्ट सागर हैं।

शिविर में 20 तीर्थंकर विधान का आयोजन किया जा रहा है, जिसके आमंत्रणकर्ता इंजी. आनन्दकुमार जैन (खुरई वाले) सागर एवं श्री सुभाषचंद सुरेशचंद वकीलचंद जैन परिवार नांगलोई दिल्ली हैं।

विधान हेतु द्रव्य के भेंटकर्त्ता श्रीमती मोहनी प्रमोदजी जैन एवं मुख्य मंगल कलश विराजमानकर्ता श्रीमती सुषमा गुलजारीलालजी जैन थे। विधान के उद्घाटनकर्त्ता सिंघई रतनचंदजी जैन मकरोनिया सागर थे।

चौदहवाँ बाल संस्कार शिविर संपन्न

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली में दिनांक 25 अप्रैल से 2 मई तक चौदहवाँ बाल संस्कार शिविर सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित आशीषजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित विकासजी छाबड़ा, श्री अनिलभाई दहीसर, ब्र. चेतना बेन, श्रीमती सारिका विकास छाबड़ा, श्रीमती स्वस्ति विराग जैन, कु. जीनल शाह, श्रीमती नेहा धमेन्द्र जैन द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला। आदरणीय पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर ने प्रौढ कक्षा ली।

इस शिविर में मुम्बई, औरंगाबाद, नासिक, जलगांव आदि स्थानों से लगभग 343 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। संपूर्ण शिविर में पूजन, कक्षा, जिनेन्द्र भक्ति के अतिरिक्त दोपहर में प्रोजेक्टर पर विशेष कक्षा का आयोजन किया गया। रात्रि में भक्ति के पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रम, संगीतमय कथा एवं प्रोजेक्टर पर प्रेरणादायी वीडियो सी.डी. का प्रदर्शन किया गया।

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता स्व. बालुबेन प्रभुदास कामदार परिवार मुम्बई और विशेष सहयोगी श्रीमती मीताबेन शैलेष भाई दोशी परिवार मुम्बई और श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई थे। **– वीनूभाई शाह, उल्लासभाई जोबालिया**

बाल संस्कार शिविर संपन्न

जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ ग्रीन वैली पब्लिक स्कूल में अ. भा. जैन युवा फैडरेशन जबलपुर द्वारा वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल जबलपुर के मार्गदर्शन में दिनांक 1 से 8 मई तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ, पण्डित अभिनयजी शास्त्री, पण्डित निपुणजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी शास्त्री बड़ौत, पण्डित सुमितजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित मनोजी शास्त्री तथा स्थानीय विद्वानों में पण्डित मनोजजी, पण्डित जिनेन्द्रजी, पण्डित श्रेणिकजी, श्रीमती अल्का, श्रीमती पूजा, श्रीमती कांति, श्रीमती श्रद्धा, श्रीमती आरती द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला।

इस अवसर पर पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ द्वारा क्रमबद्धपर्याय एवं पण्डित गौरवजी शास्त्री द्वारा समयसार पर प्रवचनों का लाभ मिला।

शिविर के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता रूपाली परिवार जबलपुर थे। शिविर में लगभग 550 बच्चों ने धार्मिक संस्कारों को ग्रहण किया।

शिविर में श्री संजयकुमारजी जैन, श्री अनुभवजी जैन, महिला मण्डल एवं चेतना मण्डल का भरपूर सहयोग रहा।

विधान एवं गोष्ठी संपन्न

दिल्ली : यहाँ विश्वास नगर स्थित दि. जिनमंदिर में सरस्वती विधान एवं विचार गोष्ठी 'शास्त्री : एक उपलब्धि' सानंद संपन्न हुई। यह कार्यक्रम श्री विवेक जैन दिल्ली पुत्र श्री सुनील कुमार जैन द्वारा टोडरमल महाविद्यालय में शास्त्री का अध्ययन पूर्ण करने के उपलक्ष्य में रखा गया।

प्रात: विधानोपरान्त गोष्ठी प्रारम्भ हुई, जिसमें स्थानीय विद्वान पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मेरे जीवन का आमूलचूल परिवर्तन इस अध्यात्म विद्या से ही हुआ है। पण्डित संदीपजी शास्त्री बांसवाड़ा ने अपने वक्तव्य में इस अपूर्व विद्या को ग्रहण करना अपने जीवन की विशेष उपलब्धि बताया। उन्होंने कहा कि गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा तत्त्वज्ञान का उद्घाटन इस पंचम काल में अमृत समान है।

गोष्ठी के अन्त में जयपुर से पधारे विशेष वक्ता पण्डित सोनूजी शास्त्री ने अपने वक्तव्य में कहा कि अध्यात्म विद्या को ग्रहण करने का मुख्य केन्द्र श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय ही है। उन्होंने कहा इस महाविद्यालय में पढकर विद्यार्थी आत्मकल्याण का मार्ग व न्यायोचित जीवन जीने की कला यहीं से सीखता है। साथ ही उन्होंने सभा में उपस्थित सभी साधर्मियों को भविष्य में अपने बालकों को इस महाविद्यालय में अध्यात्मविद्या ग्रहण करने की प्रेरणा दी। आगे उन्होंने अपने वक्तव्य में अपने गुरु आदरणीय डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का स्मरण करते हुए नवयुवकों में तत्त्वज्ञान को व्यवस्थित रूप से प्रचारित-प्रसारित करने हेतु उपकार बताया।

संपूर्ण कार्यक्रम में लगभग 250 साधर्मियों ने लाभ लिया।

बाल संस्कार शिविर संपन्न

मुम्बई : यहाँ एवरशाइन नगर मलाड (वे.) में दिनांक 18 से 22 अप्रैल तक 5वाँ बाल शिक्षण शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित अश्विनभाई मलाड (ई) मुम्बई एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। पण्डित विरागजी द्वारा बाल कक्षा एवं पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर द्वारा निमित्त-उपादान की कक्षा ली गई।

शिविर का उद्घाटन श्री दिलीपभाई शाह अहिंसा चेरिटेबल ट्रस्ट मुम्बई ने किया। उद्घाटन के अवसर पर अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की एवं सायंकाल रहस्यपूर्ण चिट्ठी पर व्याख्यान का लाभ भी प्राप्त हुआ।

शिविर में लगभग 200-250 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

बाल संस्कार शिविर संपन्न

खड़ैरी (म.प्र.) : यहाँ कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन में पण्डित टोडरमल जैन युवा शास्त्री परिषद खड़ैरी के तत्त्वावधान में दिनांक 5 से 12 मई तक बाल संस्कार शिविर एवं नव लब्धि विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित निपुणजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर, पण्डित जयेशजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित आदीशजी मड़ावरा, पण्डित सौरभजी शास्त्री अमरमऊ आदि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

दिनांक 11 मई को पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील का सम्मान समारोह रखा गया, जिसमें उन्हें 'गुरुणांगुरु' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

दिनांक 12 मई को पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल का सम्मान समारोह रखा गया, जिसमें उन्हें 'बुन्देलखण्ड गौरव' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर लगभग 300 बच्चों सहित 500 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

शिविर में आयोजित नवलब्धि विधान का आयोजन श्री नरोत्तमदासजी चैतन्य शास्त्री अभयशास्त्री परिवार खड़ैरी द्वारा किया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अभयजी शास्त्री खड़ैरी एवं पण्डित मनीषजी शास्त्री सिद्धांत द्वारा संपन्न कराये गये।

वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न

फिरोजाबाद (उ.प्र.) : यहाँ हनुमान गंज मंदिर में दिनांक 13 मई को श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला हनुमानगंज का वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पाठशाला संचालक सरोजलता जैन और पूनम जैन ने बताया कि यह पाठशाला पिछले 12 वर्षों से अनवरत रूप से चल रही है इसके माध्यम से लगभग 900 बच्चों ने जैनधर्म के संस्कार ग्रहण किये हैं। वर्तमान में भी इसमें लगभग 175 बच्चे जैनधर्म का अध्ययन कर रहे हैं।

अध्यापिका पूनम जैन ने बालबोध भाग 1, 2, 3 में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को पुरस्कृत किया। साथ ही कंठपाठ, शत-प्रतिशत उपस्थिति एवं नृत्य नाटिका प्रस्तुत करने वाले छात्रों को भी पुरस्कृत किया गया।

मंगलाचरण आकांक्षा जैन और दीक्षा जैन ने तथा संचालन अनन्तवीर शास्त्री ने किया।

विधान एवं ध्वजदण्डारोहण संपन्न

प्रतापगढ (राज.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी भाईजी का मंदिर में दिनांक 24 से 26 अप्रैल तक श्री पंचपरमेष्ठी विधान एवं जिनमंदिर के शिखर पर ध्वजदण्डारोहण का कार्यक्रम श्री धनपालजी महिपालजी सालगिया परिवार की ओर से संपन्न हुआ। इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के विविध विषयों पर तीनों समय प्रवचन का लाभ मिला।

प्रात: पंचपरमेष्ठी विधान एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा एवं पण्डित संदीपजी शास्त्री के सहयोग से संपन्न हुआ।

संपूर्ण आयोजन पण्डित सुनीलजी नाके निम्बाहेड़ा, पण्डित सुनीलजी शास्त्री (मामा) के कुशल निर्देशन में पण्डित चन्दुभाई कुशलगढ एवं श्री ललितजी लूणदा के सहयोग संपन्न कराये गये। रात्रि में प्रतिदिन स्थानीय बालकों एवं युवाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। विधान के अवसर पर संस्था को धनपालजी महिपालजी सालगिया की ओर से 5 हजार रुपये की राशि प्रदान की गई।

ज्ञातव्य है कि आयोजन के पश्चात् भी 2 दिन ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के प्रवचनों का लाभ स्थानीय समाज को मिला। दिनांक 28 अप्रैल को दोपहर में देवगढ में भी आपका एक प्रवचन हुआ।

हार्दिक बधाई !

1. अ.भा. जैन युवा फैडरेशन राज.प्रदेश के अध्यक्ष एवं टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री को अजमेर रेलवे मण्डल द्वारा उदयपुर रेलवे सलाहकार समिति का सदस्य मनोनीत किया है। ज्ञातव्य है कि आप पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल पर शोधकार्य भी कर रहे हैं। आप भाजपा युवा मोर्चा के शहर जिलाध्यक्ष भी हैं।

2. दिनांक 29 फरवरी से 7 मार्च 2012 में लवली प्रोफेशनल युनिवर्सिटी पंजाब में आयोजित ऑल इण्डिया इन्टरनेशनल बॉक्सिंग चैम्पियनशिप में टोडरमल महाविद्यालय के छात्र अजित कवटेकर निडोणी (कर्नाटक) ने वेट केटेगरी 60 में भाग लिया जिसमें उन्हें विशेष पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

टोडरमल महाविद्यालय एवं वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

पंचपरमेष्ठी विधान संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ खानियांजी स्थित श्री वासुपूज्य दि. जैन मंदिर में विद्याधर निवासी श्री एस. के. जैन द्वारा अपने सुपुत्र के विवाहोपलक्ष्य में दिनांक 29 अप्रैल को पंचपरमेष्ठी विधान कराया।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर ने संपन्न कराये।

शोक समाचार

1. **करैरा-शिवपुरी (म.प्र.) निवासी श्री उदयचंदजी जैन** का दिनांक 24 अप्रैल 2012 को ग्वालियर (म.प्र.) में 71 वर्ष की आयु में आत्मचिन्तन करते हुए समताभावपूर्वक देहावसान हो गया। आप सच्चे देव-शास्त्र-गुरु के दृढ श्रद्धानी थे। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के प्रथम सत्र के स्नातक ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री के अग्रज भ्राता थे तथा स्नातक अनिल जैन के नानाजी थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 500-500/- रुपये प्राप्त हुये।

2. **कांदला-प्रबुद्धनगर (उ.प्र.) निवासी श्रीमती मामोवतीजी धर्मपत्नी स्व. लाला भगवानदासजी जैन** का दिनांक 2 मई 2012 को 88 वर्ष की आयु में सल्लेखनापूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में संस्था को 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

3. **घुवारा (म.प्र.) निवासी श्रीमती केसरबाई धर्मपत्नी मा. चन्द्रभानजी जैन** का दिनांक 30 अप्रैल को शान्तपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा की सासूजी थीं। श्री चन्द्रभानजी तीर्थधाम सिद्धायतन समिति के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

4. **हेरले (महा.) निवासी श्री नेमिनाथ बंडू अलमान** का दिनांक 14 अप्रैल को 83 वर्ष की आयु में शान्तपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आप बहुत स्वाध्यायी एवं अध्ययनशील थे। आपने अपने बच्चे के साथ परिवार के छ: बच्चों को टोडरमल महाविद्यालय में अध्ययन हेतु भेजा था। आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित जिनचन्द्रजी शास्त्री के पिताजी थे।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

जिनपूजन शिक्षण शिविर

दिल्ली : अ.भा. दि. जैन विद्वत्परिषद दिल्ली के तत्त्वावधान में श्री दि. जैन मंदिर पार्श्वविहार दिल्ली-92 में ऐतिहासिक जिनदर्शन-पूजन शिक्षण शिविर का भव्य आयोजन डॉ. अशोक जैन गोइल्ल शास्त्री के निर्देशन में 5 मई से 7 मई 2012 को भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ, जिसमें सैंकड़ों व्यक्तियों ने लाभ उठाया। दिल्ली के अनेक विद्वानों का लाभ भी इस अवसर पर प्राप्त हुआ। शिविर में प्रबंधकारिणी कमेटी के सचिव श्री अनिल जैन का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।- **अखिल बंसल**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com